TOPIC – नीतिशास्त्र की विभिन्न शाखाएं

PAPER - ETHICS

MOBILE NO: 7839270596

E-MAIL: sakanksha806@gmail.com

Nature of ethics (Branches of ethics)

नीतिशास्त्र दर्शन की एक पुरानी और महत्वपूर्ण शाखा है। प्लेटो की रचनाओं में भी नीतिशास्त्रीय समस्याओं की चर्चा हुई है। अरिस्टाटल ने निकोमेकियन एथिक्स (Nichomachean ethics) नाम के ग्रंथ की रचना की जिसे नीतिशास्त्र का प्रथम व्यवस्थित ग्रंथ माना जाता है। इसके अलावा, प्राचीन ग्रीक दार्शनिकों में अरिस्टिपस, एपिक्यूरस और आधुनिक पाश्चात्य दार्शनिकों में बेन्थम, Mill और Kant आदि का नीतिशास्त्र में योगदान रहा है। नीतिशास्त्र के अन्तर्गत मानक या आदर्शमूलक दृष्टि से मानव आचरण का अध्ययन किया जाता है। जैसा कि जी॰ई॰ मूर ने 1903 में प्रकाशित अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Principia Ethica में कहा है। नैतिक दार्शनिकों ने मुख्य रूप से दो प्रश्नों का उत्तर ढूँढने का प्रयत्न किया – एक(1) किस किस्म के वस्तुओं का अपने- आप में अच्छा होना चाहिए या कौन सी वस्तुएँ साध्य के रूप में अच्छी हैं। और दो(2) किस किस्म के कर्मों को हमें करना चाहिए?

अपनी पुस्तक An introduction of Philosophical Analysis में जान डॉस्पर्स ने नीतिशास्त्र की दो शाखाओं को बतलाया है। ① Normative ethics ⇒ मानक नीतिशास्त्र के अन्तर्गत वैसे प्रश्नों का तर्कसंगत उत्तर ढूँढने का प्रयास किया जाता है कि कौन सी वस्तुएँ अपने- आप में अच्छी हैं और कौन से कर्म उचित हैं। मानक नीतिशास्त्र प्लेटो और अरिस्टाटल से लेकर मूर तक प्रमुख रही है।

② अधिनीतिशास्त्र (Metaethics) – डॉस्पर्स के अनुसार अधिनीतिशास्त्र के अन्तर्गत नैतिक शब्दों 'शुभ' (good) अशुभ (bad) 'उचित' 'right' और 'अनुचित' (wrong) आदि के अर्थ और अर्थों के बीच परस्पर सम्बंधों का अध्ययन किया जाता है। लेकिन अब अधिनीतिशास्त्र का क्षेत्र कुछ और व्यापक हुआ है और इसके अन्तर्गत नैतिक शब्दों के अर्थों के अतिरिक्त नैतिक निर्णय के स्वरूप, उसके कार्य; नैतिक असहमति के स्वरूप और उसे दूर करने की विधि का भी अध्ययन किया जाता है।

③ अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र (Applied ethics) ⇒ आधुनिक युग में मानक नीतिशास्त्र और अधिनीतिशास्त्र के अतिरिक्त अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र को भी अधिक महत्व दिया जा रहा है। इसके अन्तर्गत किसी तात्कालिक महत्व की व्यवहारिक समस्या का

का नैतिक समाधान ढूँढने का प्रयास किया जाता है। वास्तव में नीतिशास्त्र की ये सभी शाखाएँ आपस में जुड़ी हुई है। ~~जैसा कि हम आगे~~ ·

इसप्रकार हम कह सकते हैं कि नीतिशास्त्र की शाखाओं ~~की~~ के रूप में मानक नीतिशास्त्र, अधिनीतिशास्त्र और अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र का बड़ा महत्व है।

जैसा कि हम जानते हैं अधि-नीतिशास्त्र मानकी दर्शन की नवीनतम विधा है जिसका उदय तथा विकास वर्तमान शताब्दि में हुआ है और जिसका मुख्य उद्देश्य नैतिक शब्दों एवं निर्णयों के अर्थ तथा स्वरूप का तार्किक विश्लेषण करना और नैतिक निर्णयों के लिए प्रस्तुत किये जाने वाले तर्कों के स्वरूप एवं उनकी विशेष विधियों का स्पष्टीकरण करना है। इस दृष्टि से अधिनीतिशास्त्र मानकीय नीतिशास्त्र से भिन्न है जो हमें बताता है कि मनुष्य के लिए परम शुभ और उसके जीवन का अंतिम ध्येय क्या है; उसके कौन-से-कर्म उचित या अनुचित हैं तथा उसके मूल्यांकन का तर्कसंगत आधार क्या है; उसे अपने व्यवहारिक जीवन में किन कर्तव्यों का पालन करना चाहिए और उसके इन ~~व्यवहारिक~~ और कर्तव्यों का निर्धारण किन सिद्धान्तों द्वारा किया जा सकता है। मानकीय नीतिशास्त्र के इन मूल प्रश्नों पर प्राचीन काल से अनेक महान दार्शनिक गम्भीरतापूर्वक विचार करते रहे हैं। वस्तुतः वर्तमान शताब्दी से पूर्व नैतिक दर्शन के विकास का सम्पूर्ण इतिहास मानकीय नीतिशास्त्र की उपर्युक्त मूल समस्याओं के दार्शनिक विवेचना का सतत प्रयास है।

अधिनीतिशास्त्र को "नैतिक भाषा का विज्ञान" कह सकते हैं; क्योंकि यह इस भाषा के सभी पक्षों अथवा आयामों का क्रमबद्ध तथा अवस्थित विश्लेषण करता है। अन्य सभी प्रकार के वैज्ञानिक विश्लेषणों की भाँति नैतिक भाषा के इस विश्लेषण में भी अधि-नीतिशास्त्र यथासंभव निष्पक्ष और तटस्थ रहता है। नैतिक निर्णयों के अर्थ स्वरूप और प्रमाणीकरण का विश्लेषण करते हुए वह किसी विशेष मानकीय नैतिक सिद्धान्त का समर्थन या खण्डन नहीं करता, वह स्वयं निष्पक्ष और तटस्थ रहकर इन निर्णयों की उसी रूप में व्याख्या करने का प्रयास

Scanned by TapScanner